वह परमेश्वर जो संबंधो से प्रेम करता है

अच्छा, सभी को शुभ संध्या।
मुझे आपक ध्यान आकर्षित करने दें

और आपको इकट्ठा करने दें, और हम आज रात के बड़े
विषय पर लक्ष केंद्रित करने जा रहें हैं,

जो हैः "वह परमेश्वर जो
संबंधो से प्रेम करता है"।

और मैंने सोचा कि आज रात मैं आपको
एक साधारण प्रश्न पूछ कर करुंगा

एक खेल के बारे में, जो इस ग्रह के चारों ओर
अरबों नहीं तो लाखों लोगों द्वारा ज़रुर पसंद

किया और देखा जाता है। अब इससे या तो आप
प्रेम करते हैं या नफरत।

मैं किसके बारे में कह रहा हूँ? मैं फुटबॉल के बारे
में कह रहा हूँ। अब हम सिर्फ देखते है,

कौन प्रेमी हैं और कौन नफरत करने वाले हैं?
कौन इस खेल के प्रेमी हैं?

शायद एक या दो। और कौन,
जब यह टी.वी पर आता है आप सोचते हैं,

"मैं इसे बिलकुल भी नहीं देखना चाहता"?
वहाँ, एक जोड़ी है, 2 हाथ वहाँ पर।

अच्छा, मुझे आपसे कहने दें,
आपको इसे पसंद करना ज़रूरी नहीं है, आपको

मेरा प्रश्न समझने के लिए फुटबॉल के तज्ञ होने की ज़रूरत
नहीं। क्या आप तैयार है? बहुत आसान प्रश्न।

आप के अनुसार फुटबॉल के खेल में
बॉल कितना महत्वपूर्ण होता हैं?

क्या हम बढ़ रहें हैं? मैं जानता हूँ यह मुश्किल है,
है ना? बॉल कितना महत्वपूर्ण हैं?

कौन सोचता है, "हाँ, बहुत महत्वपूर्ण"?
बिलकुल अत्यावश्यक।

© Lee McMunn, 2011

फुटबॉल के खेल के अन्य पहलू भी होते हैं।
हम वह जानते हैं।

इसमे दौड़ना होता है, आपके संगी खिलाडियों
पर चीखना-चिल्लाना होता है।

बिलकुल, ये सारे फुटबॉल के
खेल के पहलू हैं,

परंतु गेंद बहुत ही आवश्यक है,
क्योंकि उसके बिना,

आप फुटबॉल नहीं खेल सकते, है ना?
सोचिए की आपके पास क्या बच जाता है।

आपके पास इधर उधर दौड़ते, एक-दूसरे पर
चिल्लाते 22 लोग रह जाते हैं।

और इसे देखने के लिए आपको कोई
टी.वी कैमरा नहीं मिलेंगे।

अतिआवश्यक। अब मैं आपसे यह क्यों कहता हूँ? क्योंकि
मैं कई ऐसे लोगों से मिलता हूँ जो सोचते हैं

की मसीही होना परमेश्वर में
विश्वास करने

और एक अच्छा जीवन जीने, जो परमेश्वर
को भाता है, के बारे में है।

अब मैं इसे क्या कहूँ?
अच्छा, हाँ ये मसीही होने के पहलू हैं।

परमेश्वर पर विश्वास करना और ऐसा जीवन जीने की
कोशिश करना जो परमेश्वर को भाता है, बिलकुल,

ये मसीही होने के पहलू हैं।
परंतु यहाँ कुछ महत्वपूर्ण चूक रहा है।

और वह क्या हैं? अच्छा, फुटबॉल में,
बॉल खेल की चाभी था। मसीही होने के बारे में क्या?

अच्छा जो सचमुच महत्वपूर्ण है वह है
यीशु के प्रति व्यक्तिगत वचनबद्धता।

© Lee McMunn, 2011

परंतु उसके बिना, आपके पास बस
इधर-उधर दौड़ना रह जाता है।

अब, मुझे संदेह है कि जिस मिनट,
आप कह रहें है, "मुझे यह पता है,

इससे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ।"
मैं आशा करता हूँ कि यह आपको आश्चर्यचकित

बिलकुल नहीं कर रहा परंतु आपके पास शायद दूसरा
प्रश्न भी होगा। आप शायद सोचेंगे, "बढ़ियां।

मैं समझ गया। परंतु यह प्रयोगात्मक रूप से कैसे दिखाता है?
रोज़मर्रा के जीवन मे इसका क्या अर्थ होता है कि

यीशु को अधिकार देना?" अच्छा आज रात
हम यही देखने जा रहें हैं।

मैं आपको युहन्ना के सुसमाचार से कुछ
आयतें दिखाना चाहता हूँ,

तो अगर आप यूहन्ना के सुसमाचार को लें
और मेरे साथ यूहन्ना के अध्याय 15 को पलटें

तो इससे बहुत, बहुत मदद मिलेगी।
तो यूहन्ना का अध्याय 15

और मैं आपके लिए आयत 9 से 13 तक पढ़ना चाहूँगा।
अब यह अंतिम कुछ घंटे है यीशु के

क्रूस पर जाने से पहले के और वह अपने
चेलों को तैयार कर रहा है

कि उसके बिना जीवन कैसा होगा।
और वे सही है

यह समझने की कोशिश करने में की प्रयोगात्मक
तरीका से यीशु के पीछे चलने का क्या मतलब है।

मुझे आयत 9 पढ़ने दें। यीशु कहते हैं, "जैसा पिता ने
मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैंने तुम से प्रेम रखा

मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं
को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे,

© Lee McMunn, 2011

जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं
को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि मेरा आनंद
तुम में बना रहें और तुम्हारा आनंद पूरा हो जाए।

मेरी आज्ञा यह हैः कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा,
वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने
मित्रों के लिए अपना प्राण दे।"

अब हमने देखा कि मसीहियत को गलत
समझना कितना आसान है।

हमने देखा है की बहुत लोग मसीहियत को
गलत तरीके से समझ लेते हैं विधियां

या शायद नियम जो आपको मानना जरूरी है,
परंतु हृदय के रिश्तों को चूक जाते हैं।

परंतु जब आप समझ भी जाते हैं,
जब आप अपने आप में यह सोचते हैं,

"मैं जानता हूँ यह सब यीशु के
साथ संबंध के बारे में है,"

ठीक, इसे गलत समझना काफी आसान
है कि किस तरह का संबंध

वह प्रदान करता है। अब इसके बारे में सोचें, हमारे
कई तरह के रिश्तें होते हैं

और हम लोगों से विभिन्न तरीकों से संबंध रखते हैं।

मेरे कुछ संबंध हैं लोगों के साथ और वे
सभी औपचारिक्ता के हैं।

क्या आपके भी ऐसे हैं? वह औपचारिक है,
वह व्यवसायिक है, वह दूरी के है।

यह ठीक है, ये वैसे ही है जैसे उन्हें होना है।

मेरे अन्य संबंध भी हैं लोगों के साथ जो घनिष्ट
और चाहतभरे है।

और चाभी यह है, कि दोनों को न उलझाएँ।

© Lee McMunn, 2011

तो आप कुछ उन संबंधों के बारे
में सोचें जो व्यवसायिक हैं,

यह ठीक है। मैं नहीं जानता आपके
डॉक्टर के साथ आपका संबंध किस प्रकार का है।

जब मैं जाकर अपने डॉक्टर से मिलता हूँ,
वह बहुत अच्छा है, वह व्यवसायिक है

वह बड़ा मिलनसार है। परंतु मैं सर्जरी में जाते समय उसे
आलिंगन और चुम्बन नहीं देता।

यह अच्छा नहीं होगा। और अगर मैं अपने लोकल डी.आय.
वाय स्टोर जाता हूँ और उन्हे प्रश्न पूछता हूँ।

मुझे डी.आय.वाय के बारे में कुछ पता नहीं,
परंतु अगर मैं डी.आय.वाय स्टोर में जाकर

उन्हें कील या ऐसी ही कोई चीज़ के बारें में प्रशन
करूँ और वे मुझे सही उत्तर दें,

तो मैं उन्हे गले से नहीं लगाता और
एक बड़ा अलिंगन नहीं देता।

परंतु ऐसे संबंध होते हैं जिनका दूरी पर और
व्यवसायिक होना सही है,

और अन्य, जो नज़दीकी और अंतरंग
होते है। प्रश्न यह है,

किस प्रकार का संबंध परमेश्वर हमसे चाहता है?
मेरे साथ फिर आयत 9 को देखें।

यीशु क्या कहते हैं उसे सुनें।
वे कहते हैं, “जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा है,

वैसा ही मैंने तुम से प्रेम रखा।
मेरे प्रेम में बने रहो।”

अब यह उन आयतों में से एक है जिन्हें हमें
हमारे रास्तों में रोकना चाहिए,

क्योंकि जो यीशु कर रहें है, वे कह रहे हैं

“उस संबंध को देखें जिसका आनंद मैं अपने पिता के साथ
उठाता हूँ और यही नमूना है

© Lee McMunn, 2011

जिस संबंध का प्रस्ताव मैं अपने
अनुयाईयों को देना चाहता हूँ।”

तो वह कह रहा है, “इसके बारे में विचार करें!
विचार करें कि कैसे पिता

मुझसे बेहद प्यार करता है! उस रिश्ते के बारे में विचार
करें जिसका मैं अपने पिता के साथ आनंद लेता हूँ!

विचार करें मैं पिता के प्रेम के प्रति
कैसी प्रतिक्रिया करता हूँ ।

हमारे एक दूसरे से संबंध के बारे मे विचार करें।”
अच्छा, यीशु कह रहे हैं,

“मैं इस तरह का रिश्ता
आपको देना चाहता हूँ।

यह वह चाहत है जो मेरी तुम्हारे लिए है।
तुम इसे कैसे ग्रहण करोगे?”

तो आप पिता और पुत्र के बारे में सोचते हैं।
किस तरीके के रिश्ते का वे आनंद लेते हैं?

अच्छा, यह दूरी का, ठंडा, और
व्यवसायिक नहीं है, है क्या?

आप इस तरीके का संबंध बाइबल में
बिलकुल भी नहीं देखते। यह कैसा है?

यह एक अंतरंग पारिवारिक
संबंध है। “पिता” और “पुत्र”

ये शब्द भी घनिष्टता को दर्शाते हैं।
ये चाहत व्यक्त करते हैं। वहाँ नज़दीकी है।

उन दोनों के बीच घनिष्टता है।
वह तीव्र है,

इस में आनंद है, इस में वचनबद्धता है,
यहाँ एक दूसरे के बीच में चाहत है।

वहाँ है, अगर आप उसे बुला सकें,
मीठी संगति पिता और पुत्र के बीच में।

© Lee McMunn, 2011

और यीशु कह रहें हैं, “क्या आप उस चाहत को
समझते हैं जो पिता की मेरे लिए है?

अच्छा, इसी प्रकार कि मेरी चाहत है
आपके लिए जो मेरे अनुयाई है।

और आप देखते हैं कि मैं अपने पिता को कैसे
प्यार से प्रतिसाद देता हूँ?

अच्छा, ऐसा ही प्रतिसाद मैं
आप से चाहता हूँ।” यीशु क्या दे रहें है?

अच्छा, कोई दूर का ठंडापन नहीं,
परंतु तीव्र, चाहत भरा

आनंदपूर्ण संबंध उसके अनुयाइयों के साथ।
अब क्या आप देखते हैं कि कैसा प्रस्ताव है?

सिर्फ इतना नहीं कि यीशु
हमें सम्पूण क्षमा दे रहें हैं,

हाँ यह महान कार्य है। ऐसा नहीं कि हम यीशु के
पास आते हैं और वह कहता है,

“अच्छा, मुझे तुम्हें बताने दें,
वो सारी गलतियाँ जो तुमने की है,

और जो सारे गलत काम जो आप करते रहेंगे,
मैंने उसका हल निकाल लिया है।

मैंने क्रूस पर उसकी कीमत चुकाई है।”
अब वह अद्भुत होता, है ना?

सम्पूर्ण क्षमा यीशु की
मृत्यु के आधार पर।

परंतु यह सिर्फ इतना नहीं की हम यीशु के पास आते हैं,
और वह कहता है, “मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ,

अब तुम चले जाओ।” यह है कि हम यीशु के पास
आते हैं, और वह कहता है,

“मैंने तुम्हें पूरी तरह क्षमा किया है,
परंतु अब आओ

और मेरे साथ इस संगति का आनंद लो।"
यह उत्कृष्ट है, है ना!

यीशु की महान भेंट क्या है?
यीशु की महान भेंट है यीशु!

वह कहता है, "मैं चाहता हूँ की तुम
मेरी मृत्यु के आधार पर आओ

और नज़दीकी, घनिष्ट संगति
का मेरे साथ आनंद लो।"

अब इस सप्ताह मैं मेरी बीवी से मेरे अपने
रिश्ते के बारे में सोच रहा था,

और मुझे लगता है यह बिलकुल सही समझ है।

कुछ ऐसे समय होते हैं,
आपको विश्वास करना कठिन लगेगा,

जब मैं अपने बीवी को दुःखी करता हूँ।
ऐसे कई बार होता है जब मैं मूर्खता भरे काम करता हूँ

जो वह समझती है कि अजीब हैं।
दरअसल उसके पास एक किताब है;

जिसमें वह उन सारी बातों को लिखती है,
जिन्हें वह मेरे प्रीय गुण कहती है।

ऐसी कई बातें है जो मैं करता हूँ
और वह उन्हें लिखती है।

यह किताब मेरे पढ़ने के लिए बहुत लंबी हैं।

अब ऐसी कई मूर्खता भरी बातें हैं जो मैं करता हूँ परंतु
कभी-कभी मैं कुछ ऐसी बातें करता हूँ

जो सचमुच उसे नाराज़ करती हैं और
सचमुच उसे गुस्सा दिलाती हैं।

अब जब मैं एक मर्द कि तरह रसोईघर में
जाता हूँ जहाँ वह होती है,

अच्छा, वातावरण में ठंडापन होता है।
परंतु मैं क्या चाहता हूँ?

© Lee McMunn, 2011

उस समय, मैं क्या चाहता हूँ? क्या मैं मेरी बीवी
की क्षमा चाहता हूँ? अच्छा, हाँ मैं यही चाहता हूँ।

बिलकुल मुझे मेरी पत्नी कि क्षमा चाहिए।
परंतु क्या मुझे बस इतना ही चाहिए? अच्छा, नहीं

क्योंकि मुझे क्या चाहिए? मैं उसे वापस चाहता हूँ।
मुझे वह नजदीकी घनिष्टता और संगति चाहिए।

और आप देखें हमें भी परमेश्वर से इसी
कि चाहत रखनी चाहिए। हाँ हमने उसे अप्रसन्न किया है,

परंतु अंत में हमें क्या चाहिए? क्या हम क्षमा चाहते हैं
और बाद में हमें चले जाने को कहा जाए? नहीं!

निश्चित ही हम चाहते हैं परमेश्वर हमारे लिए अपनी
बाहों को खोले और कहे,

"मेरे साथ संगति में वापस आओ।"
और बिलकुल यही तो यीशु कह रहें है।

"जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसे ही मैंने तुमसे
प्रेम रखा है।" इस घनिष्टता का आनंद लो।

अब इस तरह के संबंधों के लिए हम जानते हैं
कि इन्हें हलके से नहीं लिए जा सकता

और मुझे नहीं लगता इससे हमें आश्चर्यचकित
होना चाहिए कि यीशु, आयत 9 के अंत में, कहता है,

"मेरे प्रेम में बनें रहो।" वह कहता है
आपको इसे संभालना है,

आपको घनिष्टता को संभालना है। यह इतनी
मुल्यवान और इतनी अच्छी और इतनी अंतरंग है,

परंतु आपको घनिष्टता को संभालना होगा।
हाँ, आप मेरे पास व्यक्तिगत रीति से आते हो

परंतु आपको घनिष्टता संभालनी होगी।
प्रश्न यह हैः कैसे?

अच्छा, आयत 10 को देखें।
यीशु हमें उत्तर बताता है। वह कहता है

© Lee McMunn, 2011

"यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे,
तो मेरे प्रेम में बने रहोगे

जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओ को माना है,
और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।"

अब यह सारी आज्ञाओं की बातें
आपको शायद आजीब सी लगेंगी।

परंतु इसे हमें याद दिलाना चाहिए कि
यीशु के साथ रिश्ते में,

कौन अधिकारी है? वह है। वह मालिक है।
वही है जिसे हम समर्पण करते हैं।

अब इसका मतलब तुरंत बदलाव नहीं है।
ऐसा नहीं की आप खुद को

यीशु को सौंपने के बाद सुबह उठते हैं और अगली
सुबह आप उठते हैं, आइने के सामने जाते हैं,

कोई ऐसा नहीं कहता, "मुझे ऐसा लगता है पिछली
रात भर में मैं बिलकुल सही मनुष्य बन गया हूँ"

मैं ऐसा नहीं करता। धीरे-धीरे बदलाव
होता है और वह बढ़िया चीज़

जिसका यीशु वादा करता है वह है जैसे ही हम व्यक्तिगत
रीति से उसके पास आते हैं वह अपने पवित्र आत्मा

को भेजता है हमारे अंदर होने, हमारे अंदर कार्य करने
और हमें बदलने के लिए ताकि दिन ब दिन

यह बदलाव आता जाए। परंतु रोज़ यीशु के नियम के
अधीन होना होता है

और मैं खुद को यह याद दिलाता हूँ की
जो यीशु मुझे आज्ञा देता है

वही यीशु है जो मुझसे प्रेम करता है।

और यीशु के अधीन होने का नमूना क्या है?
क्या आप इसे दोबारा देखते हैं?

यह पिता का और पुत्र का नमूना
है। यीशु कहता है,

“मैं अपने पिता की आज्ञाओं को मानता हूँ और उसके
प्रेम में बना रहता हूँ।” तो यीशु कह रहा है

अगर हम उसकी संगति कि घनिष्टता
में रहना चाहते हैं

तो वही करें जो वह कहता है। हम उसकी आज्ञाओं
का पालन करते है। क्योंकि नहीं तो उस…

उस संबंध के साथ समस्या होगी जो हमारा
प्रभु यीशु के साथ है।

हम इसे पिता और पुत्र के
रिश्ते में देखते है।

कभी-कभी छोटे प्यारे बच्चे ऐसी
हरकतें करते है जिनसे उनके पिता मुस्कुराने लगते हैं।

वे मुर्खतापूर्ण भरी हरकतें करते हैं और कुछ समय
बाद उसपर उन्हें हँसी आती है।

परंतु कभी-कभी ये छोटे प्यारे बच्चें, अच्छा,
सचमुच उपेक्षापूर्ण होते है, क्या वे नहीं होते?

और आप वहाँ पिता और पुत्र की
संगति में नुकसान देखते हैं।

प्रेम अब भी है, परंतु वह मिठास, वह संगति,
उसमें वह बात नहीं।

हम यह समझते हैं। और यीशु कह रहा है
अगर हम उसके साथ

संगति की घनिष्टता को चाहते हैं तो हम वह जो
कहता है उसका पालन करते हैं।

अब प्रश्न है कि वह क्या कहता है?
या शायद आप अपने आप में सोच रहे होंगे

की यह सब आज्ञा पालन कि बातें...
शायद कुछ ऊबाउ,

थोड़ी तनावपूर्ण लग सकती हैं, मुझे यह अच्छा नहीं लगता।
अच्छा, ज़रा देखिए यीशु आयत 11 में क्या कहता हैं।

© Lee McMunn, 2011

यह बढ़ियां है। इसे देखें। वह कहता है,
"मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं

कि मेरा आनंद तुम में बना रहे
और तुम्हारा आनंद पूरा हो।"

दो बार वह "आनंद" कहता है। क्या आप
आनंद कि खोज कर रहें है? बिलकुल आप आनंद चाहते हैं।

आप गहरा लंबे समय का आनंद चाहते हैं।
यीशु कहते हैं, "मेरी आज्ञा मानो

और यह सब तनावपूर्ण, कड़ी मेहनत का
और ऊबाउ नहीं है।"

यीशु की आज्ञाओं को आचरण में
लाने से ही आनंद मिलता है।

तो प्रभु यीशु की आज्ञाएँ क्या है?
अच्छा, शुरुवात करने के लिए सबसे उत्तम जगह है

वहाँ जाना जिसे मसीही लोग नया नियम
कहते हैं और वहाँ यीशु के शब्दों

को पाना और उन लोगों के शब्दों को भी जिन्हें
यीशु ने हमें उसके प्रवक्ता के रूप में दिए हैं।

और आप पाएंगे, सही तरह से समझा जाए तो,
वहीं पर यीशु बात करते

और उसके लोगों पर राज्य करते हैं। अब जब
आप नए नियम की ओर मुड़ते हैं तो क्या पाते हैं?

अच्छा, आप जो नहीं पाने वह है हमारे
जीवन की छोटी-छीटी बातों कि सूची।

तो इसके बारे में सोचें। आप आज सुबह
उठे, मैं अनुमान लगाता हूँ।

आप आज सुबह उठे, अच्छा,
आपको कुछ निर्णय लेने है, है ना?

मुझे क्या पहनना है? आप इसका निर्णय कैसे लेते हैं।
एक मसीही होने के नाते मैं बाइबल की ओर नहीं मुड़ता हूँ

और सोचता हूँ, “ठीक है, बाइबल में वह हिस्सा कहाँ
है जो मुझे बताता है की मैं क्या पहनूं?”

मैं कैसे निर्णय लूं कि मुझे क्या पहनना है
मैं मेरी पत्नी से पूछता हूँ।

क्योंकि जब हम मुलाकात करने लगे तभी
मैंने यह तुरंत जाना था, यह हमारी तीसरी मुलाकात थी,

और मुझे याद है मैंने उसे
सचमुच साफ-साफ कहा था,

“मुझे लगता है कि मेरे साथ सरे आम घूमने में तुम
शर्मिंदगी महसूस करती हो मेरे कपड़ो के कारण।”

और उसने मुझसे कहा बहुत बढ़िया और वह
मुझे थोड़ा बदलने के लिए लेकर गई।

अब आज के दिन तक भी मैं इसी तरह निर्णय
लेता हूँ की मैं क्या पहनने वाला हूँ। परंतु अन्य चीज़ें,

नाशते मे मैं क्या खाता हूँ? आपको इसके
लिए बाइबल कि ओर मुड़ने की जरूरत नहीं।

आप क्या पाते हैं यीशु की आज्ञाओं के बारे में जब
आप बाइबल कि ओर मुड़ते हैं?

वह कुछ सीमाएँ ठहराता हूँ,
कुछ चौड़ी सीमाएँ जहाँ वह कहता है,

“यही वह तरीका है जिसके अनुसार मैं चाहता हूँ, तुम जीओ।
यही है वह जगह जिसमें आप निवास कर सकते हैं।”

परंतु वह जो चाहता है हम करें वह है
हम हमारे विश्वास में बढ़ते जाएँ।

वह चाहता है कि हम अधिक से अधिक
सीखें कि वह क्या चाहता है और वह क्या करता है

और वह चाहता है कि हम बढ़ें और निर्णय लें।
और मुझे यह पसंद है।

यह बहुत बहुत मुक्तिदायक है।

परंतु आप शायद अभी भी पूछ रहें होंगे, “ए, ठीक है,
मैंने यह जान लिया, परंतु क्या कोई विशेष बातें हैं?”

© Lee McMunn, 2011

अच्छा, मुझे समाप्त करने दें आपको
यीशु की एक विशेष आज्ञा दिखाते हुए

और आप इसे आयत 12 और 13 में पाएँगे।
यीशु यह कहता है

"मेरी आज्ञा यह हैः कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा,
वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने
मित्रों के लिए अपना प्राण दे।"

अच्छा, यहाँ मुख्य लक्ष है,
यीशु अपने चेलों को सिखा रहे हैं।

कि कैसे उनको एक-दूसरे का
ख्याल रखना है जब वह चला जाएगा।

और वह उन सभी संबंधों का सारांश निकालता है,
जो सब उनको करना है

एक सरल आदेश के साथ: एक दूसरे से प्यार।
अब यह समझना कितना महत्वपूर्ण है

क्योंकि जितना कि हम कहते
आए हैं की मसीही बनना

यीशु से व्यक्तिगत रिश्ते के बारे
में है, यह हमेशा व्यक्तिगत होता है

परंतु यह कभी एक अकेला होना नहीं होना चाहिए।

क्योंकि मसीही बनने का अर्थ है कि
आप एक परिवार से जुड़ जाते हैं।

हम यीशु के पास व्यक्तिगत रीति से आते हैं
और वह कहता है, "अपने भाइयों और बहनों से मिलों।"

सामूहिक जिम्मेदारियाँ हैं।
यीशु कहते हैं आप अकेले में एक मसीही

कि तरह नहीं जी सकते।
वह कहता है हमें एक-दूसरे से प्रेम करना है।

इसका मतलब क्या है? एक दूसरे से प्रेम करना?
मुझे आपको बताने दें इसका मतलब क्या नहीं है।

© Lee McMunn, 2011

और मैं सोचता हूँ आपको यह सुसमाचार लगेगा।
अन्य मसीहीयों से प्रेम करने का मतलब यह नहीं

की उन्हे एक बड़ा गीला चुंबन देना
जब कभी आप उनसे मिलो।

तो सिर्फ अपने आस-पास देखें। इस क्षण अपनी
मेजों के इर्द-गिर्द देखें। क्या यह अच्छा होता?

आप आस-पास देखकर सोचते हैं, “ओह!

मैं उन्हें एक बड़ा गीला चुंबन दे सकता हूँ, यह बढ़ियां है।”
यह सिर्फ... अच्छा, आप भागते हैं!

दूसरे मसीहियों से प्रेम करना, अच्छा,
इसका मतलब है हमें ख्याल रखना है,

इसका मतलब की हमें दूसरे मसीहीयों
के लिए संवेदना होनी चाहिए

परंतु यहाँ कार्यों पर जोर दिया है। यीशु कहता है,
“एक दूसरें से प्रेम रखो जैसा की मैंने तुमसे प्रेम रखा है।”

और आप यीशु के जीवन को इस पुस्तक में दर्ज
किए हुए देखते हैं

और आप यीशु के कार्यों पर कार्य देखते हैं जैसे
ही वह प्रयोगात्मक तरीके से चीज़ें करते हैं

चेलों की सेवा और मदद करने के लिए।
और यह हमारे मनों में होना चाहिए

जैसे हम सोचते हैं की दूसरें मसीहियों से
प्रेम करने का मतलब क्या है।

अंत में इसका मतलब क्या होगा?
अच्छा, बाइबल में बार-बार

और कलीसिया के इतिहास में और
आज के समाज में भी

दूसरे मसीहियों से प्रेम करने के कई उत्तम तरीकों
में से एक है उनके साथ समय बिताना।

उनकी उपस्थिति में रहना, ऐसे कार्य करना जिनसे उनकी
सेवा हो, आपका कुछ समय देंना

ताकि आप उनके साथ हों, उनकी देखभाल करना,
यह करना बहुत ही बढ़ियां है।

एक और महान बात जो आप
सम्पूर्ण बाइबल में देखते हैं;

मसीही एक-दूसरे की मदद
अपने पैसे देकर करते हैं

ताकि वे एक दूसरे कि देखभाल कर सकें।
अब आप शायद सोचेंगे,

“अच्छा, मुझे इस सब के साथ किस हद
तक जाना होगा?” जो स्तर यीशु स्थापित करते हैं

वह है उसकी अपनी मौत क्रूस पर।
“महान प्रेम इसके अलावा कुछ नहीं,

की वह अपने मित्रों के लिए अपनी जान दें।”
और वही तो यीशु ने किया।

वह क्रूस पर जाकर मरने की राह पर था।
वह अपना जीवन बलिदान देने जा रहा था।

एक प्रेम कृत्य के रूप में अपने चेलों के लिए।
अब मैं सोचता हूँ कि बलिदान यह शब्द

काफी मददगार है हमारे लिए जैसे ही हम सोचते हैं
हम दूसरे मसीहीयों से कैसे प्रेम करें।

इसके बारे में सोचें। वह कौनसी दो बहुत बहुमूल्य
चीज़ें है जो लोग पकड़े रहते हैं

हमारे समाज में? मैं सोचता हूँ यह समय और पैसा है।
बलिदान, इसके बारे में क्या?

यह महंगा है, है ना?
बलिदान में कुछ दे देना शामिल होता है।

कुछ चीज़ें नहीं कर सकना
ताकि कुछ और कर सकें।

अच्छा, तो इस बड़े जगत के यीशु के परिवार में दूसरे
भाइयों और बहनों से प्रेम करने मे

हमारा कुछ समय और कुछ
पैसा भी बलिदान करना शामिल है

ताकि इसके बजाए हम अपना समय और पैसा हमारे

मसीहि भाईयों और बहनों की मदद करने में लगा सकें।

अब मैं जोर देना चाहता हूँ जैसे ही मैं यह सब
कहता हूँ यीशु कहता है यह हमारे आनंद केलिए हैं।

इसे सुनकर यह ना सोचें, "ओह नहीं!
यह सब तनाव पूर्ण है।" यह हमारे आनंद के लिए हैं।

और यीशु कहते है कि यह भी एक मार्ग है उसके
साथ घनिष्ट संगति बनाए रखने के लिए।

यही वह है जो वह हमें दे रहा है-
नजदीकी, व्यक्तिगत, घनिष्ट संबंध

यीशु के साथ। और वह चाहता है कि
हम उसे बरकरार रखें। और हम उसे करेंगे।

जैसे ही हम उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

अच्छा मैं सोचता हूँ की मैंने काफी कुछ कह दिया है आपके
सोचने के लिए,

तो मुझे आपको वापस आपने टेबलों पर भेजने दें

और देखें की आप उसका क्या
बनाते है जो मैंने अभी कहा है।

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com